

अध्याय - 2

संबन्धित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना :-

अनुसंधान कार्य में अच्छी सफलता के लिए शोधकर्ता को संबन्धित साहित्य व सामाग्री का गहनता से अध्ययन करना आवश्यक होता है। प्रत्येक प्रकार के मनोवैज्ञानिक अनुसंधान में चाहे वो भौतिक विज्ञान के क्षेत्र का हो अथवा समाजिक विज्ञान के क्षेत्र का, साहित्य का पुनरावलोकन प्रारम्भिक एवं अनिवार्य कदम है। किसी विशिष्ट अनुसंधान में उनका कार्य इस बात पर निर्भर करता है की विषय के संबन्ध में पहले से कितना ज्ञान है, अथवा सूचना का उद्देश क्या है? अनुसंधानकर्ता सदैव अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उत्सुक रहता है वह सदैव यह प्रयास करता है कि उसकी खोज का स्वरूप क्या है? वो कोन से साधन अथवा क्रिया-कलाप या रास्ते हैं जिससे उसका अनुसंधान एक सुलभ प्रक्रम बन जाए? उसे एक अन्तर्दृष्टि या सुझाव या मार्गदर्शन मिल जाए जो उसके भावी शोध का आधार हो। संबन्धित साहित्य के पुनरावलोकन के संबन्ध में जन मानस में एक लोकोक्ति प्रचलित है "सूझ से बुझा भला" इसका भावार्थ है कि यदि कोई तथ्य हमें ज्ञात भी है तो भी हमें उसकी निश्चितता व सत्यता को शत-प्रतिशत करने हेतु उमका गहन अवलोकन अवश्य ही करना चाहिये।

किसी भी वैज्ञानिक अनुसंधान की शुरुआत का प्रथम चरण संबन्धित साहित्य का अवलोकन ही होता है। बहुदा नव मीखिए अनुसंधानकर्ता या सत्य को प्राप्त करने के संकीर्ण रास्तो पर चलने वाले लोग अनुसंधान प्रक्रिया के इस कदम या सोपान के महत्व को पहचान नहीं पाते हैं, तथा इसका अर्थ अनुसंधान के तथ्यों को जुटाने व इससे संबन्धित उपकरण बनाने से लेते हैं, यही पर चूक हो जाती है, फलस्वरूप रास्ते गलत चुन लिए जाते हैं। अर्थार्थ शोधकार्य में एक सम्यक दूरदृष्टि नहीं रख पाते। अनुसंधान विधिशास्त्र के सभी मर्मज्ञ समष्टि स्वर में समर्थन के रूप में यह सलाह देते हैं की प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान में भावी शोध की दृष्टि साहित्य के पुनरावलोकन से प्राप्त होती है। इसलिए संबन्धित साहित्य का सर्वेक्षण तथा उसकी समीक्षा एक अनिवार्य कदम है।

प्रो. गूडबार एवं स्केट्स ने कहा है की "प्रकार एक योग्य व जागरूक चिकित्सक औषधि में हुये नवीनतम अन्वेषणों के साथ रहते हुये रोग की जड़ो तक शीघ्र पहुच जाता है ठीक उसी

प्रकार शिक्षा शास्त्र के विद्यार्थी और शोधकरता को शैक्षिक सूचनाओं के साधनों और उपयोगों तथा उनके स्थापन से परिचित होना चाहिये।”

1. नन्दा. ए. आर. (1992) ने कटक शहर के प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों के नेतृत्व व्यवहार के अध्ययन का प्रयास किया।

उन्होंने अपने अध्ययन में 30 प्रधानाध्यापकों को शामिल किया और पाया कि उनमें से 10 प्राचार्य अधिक प्रभावशाली नेता पाये गए। 4 प्राचार्य अधिक क्षतिपूर्ति व्यवहार व कम पहल करने वाला व्यवहार करने वाले पाये गए जो एक नेता के लिए वांछित नहीं हैं। 10 संस्था प्रधान पहले कि संरचना व क्षतिपूर्ति व्यवहार में अयोग्य पाये गए। इसलिए ये संस्था प्रधान सबसे योग्य संस्था प्रधान थे। महिला एवं पुरुष प्रधानाध्यापकों में नेतृत्व कि दृष्टि से कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। नगरपालिका द्वारा नियंत्रित विद्यालयों के संस्था प्रधानों एवं शिक्षा विभाग द्वारा नियंत्रित विद्यालयों के संस्था प्रधानों में भी नेतृत्व कि दृष्टि से कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

1. सुधा, टी. 1997 ने अपने अध्ययन दिल्ली के माध्यमिक विद्यालयों में नेतृत्व प्रभावशीलता का अध्ययन में पाया कि प्रभावशाली नेता अपने विद्यालय में अधिनायक कि भूमिका कि बजाए सुविधा दाता, परिस्थितिया उपलब्ध करवाने वाले कि भूमिका निभाकर स्कूल को अच्छे स्कूल में बदल देता हैं और वह विद्यालय कि, अभिभावकों की, छात्रों की दिन प्रतिदिन की आवश्यकताओं की पूर्ति में प्रभावशाली तरीके से प्रशासन एवं प्रबंधन करता हैं। प्रभावशाली नेता प्रबंधकीय कार्य में सेवा भाव के साथ अपने आप को समर्पित कर विद्यालय को अच्छा विद्यालय बना देता हैं। अच्छा प्रधानाचार्य अपने विद्यालय के बारे में स्पष्ट दर्शन व स्पष्ट लक्ष्य रखता हैं तथा सहभागिता शैली से कार्य करते हुए लक्ष्यों को प्राप्त कर लेता हैं।
2. कुमार, दिलीप गिरि (2006) ने उड़ीसा की भुवनेश्वर नगरपालिका क्षेत्र में माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के नेतृत्व व्यवहार का अध्ययन किया। अपने अध्ययन में उन्होंने पाया कि सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्य के प्रशासनिक व्यवहार में सार्थक अंतर था। यह प्रकट हुआ कि दोनों प्रकार के विद्यालय की परिस्थितियां अलग होने के कारण वहाँ के प्रधानाचार्य भिन्न – भिन्न मानदंड अपनाते हैं। सरकारी और गैर सरकारी छात्र विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के नेतृत्व व्यवहार में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। तथापि सरकारी और गैर सरकारी विद्यालयों के प्रधानाचार्य अलग-अलग प्रकार का नेतृत्व व्यवहार रखते हैं। काम करने के ढंग में दोनों प्रकार के विद्यालयों के प्रधानाचार्य के नेतृत्व

- व्यवहार में कोई अंतर नहीं हैं। छात्रा और छात्र विद्यालयों के प्रधानाचार्यों का नेतृत्व व्यवहार एक ही प्रकार का मौजूद हैं यह चिंतन का विषय हैं।
3. दुबे, सुशील (2013) ने अपने अध्ययन "मध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली का तुलनात्मक अध्ययन " में पाया गया की पुरुष प्रधानाचार्य एवं महिला प्रधानाचार्य की नेतृत्व शैली में सार्थक अंतर नहीं हैं लेकिन पुरुष प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली का माध्यमान अधिक हैं। देखा जा सकता हैं कि पुरुष प्रधानाचार्य नेतृत्व शैली में महिला प्रधानाचार्यों से अच्छे हैं। प्रधानाचार्यों कि योग्यता स्नातक, अधिस्नातक, एम.फिल./ पी-एच.डी. के संदर्भ में नेतृत्व शैली में सार्थक अंतर पाया गया। अधिस्नातक योग्यताधारी स्नातक एवं एम.फिल./ पी-एच.डी योग्यताधारी प्रधानाचार्यों से अधिक सक्षम पाये गए। निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्य राजकीय विद्यालयों के प्रधानाचार्यों से नेतृत्वशैली में अच्छे पाये गए। 0 से 10 वर्ष के अनुभवी प्रधानाचार्य, 10 से 20 और 20 वर्ष से अधिक अनुभव वाले प्रधानाचार्यों से नेतृत्व शैली में अच्छे पाये गये। शहरी क्षेत्र के प्रधानाचार्यों ग्रामीण क्षेत्र के प्रधानाचार्यों से अच्छे पाये गये।
 4. अब्बलोली, आलोरेजा रेजाई (2013) ने अपने अध्ययन "भारत और ईरान में माध्यमिक स्तर पर प्रधानाध्यापकों की नेतृत्व शैली का विद्यालय प्रभावशीलता के संबंध में अध्ययन" में पाया की सिराज शहर (ईरान) के मुख्य अध्यापकों की नेतृत्व शैली और मैसूर शहर (भारत) के मुख्य अध्यापकों की नेतृत्व शैली में सार्थक अंतर पाया गया। सिराज शहर के मुख्य अध्यापक नेतृत्व शैली में मैसूर शहर के मुख्य अध्यापकों से अच्छे पाये गये। 40 वर्ष से अधिक उम्र के प्राचार्य अच्छी नेतृत्व शैली वाले पाये गये। स्नातक योग्यताधारी प्रधानाध्यापक अधिस्नातक योग्यताधारी प्रधानाध्यापकों से नेतृत्व शैली में अच्छे पाये गये। परिवर्तनकारी नेतृत्व शैली और विद्यालय प्रभावशीलता में सिराज शहर (ईरान) में उच्च धनात्मक सह-संबंध पाया जबकि मैसूर शहर में निम्न धनात्मक सह-संबंध पाया गया।
 5. नोलेन केंट (2003) ने अपने अध्ययन "शिकागो के पब्लिक माध्यमिक विद्यालयों में प्रधानाचार्य के नेतृत्व व्यवहार , शिक्षक उपस्थिति और छात्र उपलब्धि का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" में पाया गया की प्रधानाचार्य के नेतृत्व व्यवहार , शिक्षक उपस्थिति और छात्र उपलब्धि में सार्थक विद्यमान हैं। शिक्षक उपस्थिति और प्रधानाचार्य नेतृत्व व्यवहार में सार्थक संबंध पाया गया। प्रधानाचार्य के नेतृत्व व्यवहार और छात्र उपलब्धि में सार्थक संबंध नहीं पाया गया।

6. टेलर, सुसान पावेल (2004) ने अपने अध्ययन "नेतृत्व और विद्यालय सफलता : जोखिम वाले विद्यालयों में सफल प्रधानाचार्यों का व्यवहार एवं कार्यप्रणाली" में यह जानने का प्रयास किया की उच्च जोखिम वाले सफल विद्यालयों में प्रधानाचार्य का व्यवहार अधिगमन उपलब्धियों को कैसे प्रभावित करता है कि इन विद्यालयों का निष्पत्ती अंतराल पता लगाया जा सके। उन्होंने अपने अध्ययन कि परिणामों पाया कि प्रधानाचार्य का दृष्टिकोण विद्यालय कि सफलता कि लिए सर्वोपरि होता है, विद्यालय कि संस्कृति शिक्षको को छात्रों कि तरह पोषण करने वाली होनी चाहिए, पाठ्यचर्या का पढ़ाया जाना सबसे महत्वपूर्ण होना चाहिए। प्रधानाचार्य शिक्षण के लिए समय बचाए और छात्रों कि व्यक्तिगत भिन्नताओं के अनुसार उन्हें संबोधित करने के लिए कार्यक्रम उपलब्ध करवाये, विद्यालय कि संस्कृति शिक्षको और छात्रों को परिवारों के रूप में गले लगाये, प्रधानाचार्य कई बार सोम्य तानाशाह का रूप धारण करता है और शिक्षकों का ध्यान रखे बिना ही निर्णय लेता है, उसका प्रमुख कार्य होता है 'शैक्षणिक नेता' का। जो सुझाव दिये गए इनमें प्रमुख था की प्रधानाचार्य अपने विद्यालय की संस्कृति को जाने, एक दृष्टि का निर्माण करें और अपने विद्यालय की सफलता के लिए गर्मजोशीपूर्ण, पोषण वाला वातवरण बनाए, पाठ्यक्रम को जाने और कक्षा को प्रभावशाली बनाने के तरीको की पहचान करे, छात्रों की आवश्यकता और अधिगमन कार्य के लिए कार्यक्रम उपलब्ध करवाए और सहयोगात्मक नेता के स्थान पर कब वह सोम्य तानशाह बन जाता है इसे समझे। अपने प्राथमिक कार्य 'शैक्षिक नेता' के लिये प्रभावशाली प्रबंधकीय कौशलों का प्रयोग करें।
7. स्वाति, मो. जावेद, मजोका, अनवर सईद, इकवाल मो, (2011) ने पाकिस्तान में किए अपने अध्ययन "खैबर पखस्तुनिस्थान में माध्यमिक स्तर पर प्रधानाचार्य नेतृत्व शैली और उसका विद्यालय की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव" में विभिन्न तथ्यों का विश्लेषण कर पाया की प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली कई प्रकार की पाई गयी - प्रजातांत्रिक, एकतंत्र, मुक्त शैली, उदार शैली। कुछ प्रधानाचार्यों में प्रभावशाली नेतृत्व शैली पाई गयी। लैंगिक आधार पर प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। सामान्य रूप में नेतृत्व शैली का शैक्षिक परिणामों पर कोई विशेष प्रभाव देखने में नहीं आया। लेकिन छात्र विद्यालयों की तुलना में छात्रा विद्यालयों में शैक्षिक उपलब्धि में विभिन्न नेतृत्व शैलियों (एकतंत्र शैली को छोड़कर) में सार्थक अंतर देखने में आया।

8. मुरे, किर्विंसी लिटिल (2003) ने अपने अध्ययन "दक्षिणी करोलिना के माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के नेतृत्व कौशलों के संबंध में अध्यापकों के अनुभव" में पाया कि अच्छे विद्यालयों का स्तर पाये गये विद्यालयों और असंतोषजनक स्तर पाये गये विद्यालयों में सार्थक अंतर पाया गया। इन्ही विद्यालयों कि नेतृत्व शैली कि तीन उप मापनियों के अनुसार तुलना करने पर इनमें कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। मॉनिटर छात्र प्रगति उप मापनी, निर्देशन उप मापनी और समन्वय पाठ्यक्रम उप मापनी में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। आँकड़े यह भी संकेत करते हैं कि उन विद्यालयों के शिक्षक जिनको सम्पूर्ण स्तर निर्धारण में असंतोषजनक स्तर मिला उन्होंने अपने प्रधानाचार्य को परिवीक्षण कौशल, शिक्षण निर्देशन का मूल्यांकन और निर्धारण में उच्च स्तर मिला था, की तुलना में उच्च स्तर प्रदान किया।